(क) चेतन अनुभूति संबंधी क्रियाएँ,
(ख) व्यवहार सम्बन्धी क्रियाएँ एवं
(ग) अन्तरावयव सम्बन्धी क्रियाएँ।

संवेग में होनेवाले बाह्य परिवर्तन निम्नलिखित हैं:-

1. मुखाकृतिक अभिव्यंजन (Facial expresion):-

संवेग की अवस्था मे होनेवाले शारीरिक परिवर्तनों में मौखिक आकृति में परिवर्तनों के लक्षण सर्वाधिक स्पष्ट रूप से देखे जाते हैं। विभिन्न प्रकार के संवेगों में चेहरे के विभिन्न भागों, जैसे - ललाट, आँख, नाक, गाल, होंठ इत्यादि में विशेष प्रकार की गति, संकोचन, आदि के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं जिनके आधार पर विभिन्न संवेगात्मक भावों को पहचानना आसान हो जाता है। जैसे- क्रोध की अवस्था में आँखो का लाल होना तथा भवों का चढ़ जाना, दाँतों को पीसना, होठों का फड़फड़ाना आदि परिवर्तन होते हैं। मुखाकृतिक अभिव्यंजन (facial expression) संबंधी परिवर्तनों के आधार पर संवेगों की पहचान प्रायः व्यक्ति अपने अनुभव के आधार पर आसानी से कर लेता है।

यद्यपि विभिन्न संवेगात्मक अवस्थाओं में खास-खास प्रकार के मुखाकृतिक अभिव्यंजन पाये जाते हैं, तथापि ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि विशिष्ट प्रकार के मुखाकृतिक अभिव्यंजन किसी संवेग विशेष में ही पाया जाता है, क्योंकि एक ही तरह के मुखाकृतिक अभिव्यंजन द्वारा एक से अधिक प्रकार के संवेगों का प्रदर्शन अलग-अलग व्यक्तियों परिस्थितियों और सामाजिक या सांस्कृतिक परिवेशों में पाया

जाता है। इस सम्बन्ध में डार्विन तथा फर्नबर्गर ने एक प्रयोग किया। उन्होंने कुछ निर्णायकों के समक्ष विभिन्न संवेगों को प्रकट करने वाले चेहरों के चित्र रखे और उनसे चित्रों को देखकर संवेगात्मक भावों के निर्णय करने को कहा। देखा गया कि निर्णायकों के विचारों में काफी भिन्नता थी। उडवर्थ ने मुखाकृतिक अभिव्यंजन के आधार पर संवेगों का अध्ययन कम उपयुक्त माना है।

(2.) स्वराभिव्यंजन (Vocal expression):- संवेग की अवस्था में वाकतंत्र की क्रियाओं में भी विशेष प्रकार के परिवर्तन होते हैं, जिससे स्वराभिव्यंजन सामान्य अवस्था से भिन्न स्वरूप का हो जाता है। जैसे:- रोना, चिल्लाना, हँसना इत्यादि।

परन्तु मुखाकृतिक अभिव्यंजन की ही तरह केवल स्वराभिव्यंजन के आधार पर संवेगों का निर्धारण संभव नहीं है, क्योंकि अनेक परिस्थितियों में एक ही प्रकार की स्वराभिव्यंजन दो भिन्न संवेगों में पाया जाता है। अतः यहाँ भी संवेगात्मक परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है।

(3) शारीरिक स्थितियाँ (Body Postures):- संवेग की अवस्था में प्राणी की शारीरिक स्थिति में भी परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए, भय की अवस्था में व्यक्ति भागने जैसी मुद्राओं का प्रदर्शन करता है; दुख की अवस्था में व्यक्ति झुका रहता है; क्रोध की अवस्था में आक्रामक मुद्राएँ बना लेता है और खुशी की अवस्था में सिर ऊँचा कर लेता है आदि। लेकिन यहाँ भी निम्नलिखित तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं:—

(क) एक ही संवेग की अवस्था में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की शारीरिक मुद्राएँ अलग-अलग होती है। उदाहरणार्थ:- भय की अवस्था में एक व्यक्ति यदि भागने की मुद्रा का प्रदर्शन करता है, तो दूसरा व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मूर्तिवत खड़ा रहता है।

(ख) विभिन्न शारीरिक परिस्थितियों में एक ही प्रकार की शारीरिक मुद्रा अलग-अलग संवेगों की द्योतक होती है।

(ग) विभिन्न संवेग भिन्न-भिन्न शारीरिक मुद्राओं को उत्पन्न करते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सिर्फ बाहरी प्रदर्शन के आधार पर सिर्फ देखकर सही निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है, इसके लिए हमें प्राणी से बात करने पर ही सही जानकारी प्राप्त हो सकती है।